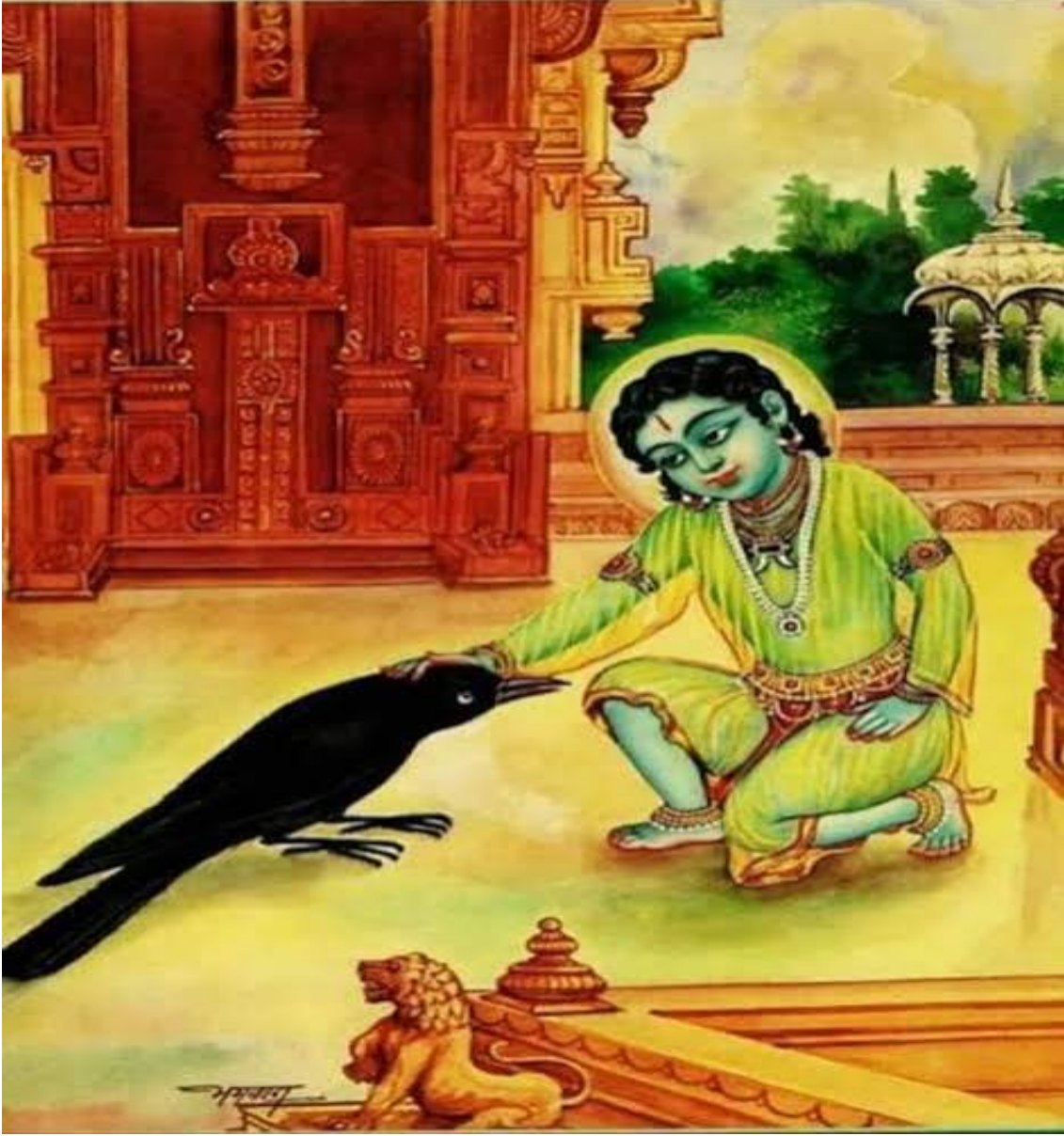




Ram tattva in Shrimad Aadi Ramayan

श्रीमदादिरामायण में रामतत्त्वविमर्श

ब्रह्मा उवाच:-

**मत्स्यं कुर्मं वाराहं नृहरिमथ हरिं वामनं हंसरुपं यज्ञं नारायणाख्यं
त्रिभुवनललितं भार्गवं वै हयायम।**

**प्रद्युम्नं वासुदेवं कलिमलदमनं रेवतीप्राणनाथं बुद्धं कल्किं यदन्त्ये सकलं
ब्रह्म राम स्मरामि।।**

Aadi ramayan 1.1.5

Brahma ji says:- I remember the all prevaiding Brahman Shri Ramchandra who takes incarnations like matsya, kurma, varah, hari, vaman, hansa, yagyanarayan, parshuram, pradhyumna, eradicator of bad effects of kaliyuga krishna, balram, sugata buddha, kalki and other shaktyavesh avtars

ब्रह्मा जी कहते हैं:- मैं मत्स्य, कूर्म, वराह, हरि, वामन, हंस, यज्ञनारायण, परशुराम, प्रद्युम्न, कलियुग के बुरे प्रभाव के विनाशक कृष्ण, बलराम, सुगत बुद्ध, कल्कि और अन्य शक्त्यवेश अवतार लेने वाले सर्वव्यापी ब्रह्म श्री रामचन्द्र का स्मरण करता हूँ।

सर्वस्वरूपो भगवान् अयमेव रघुत्तमः।

यादृशी भावना यस्य तादृशस्तस्य भासते।।

~आदि रामायण १.५.२०

Raghunath is the Supreme Lord in all His forms. Whatever feeling one worships with, he takes that form.

रघुनाथ अपने सभी रूपों में परमेश्वर हैं। जिस भावना से कोई उनकी पूजा करता है, वे वैसा ही रूप धारण कर लेते हैं।

श्रीरामे देवदेवेशे कोशलायां विराजति।

अंशावताराः कृष्णाद्याः प्रणमन्ति ह्यसंख्यकाः।

Aadi ramayan 1.6.30

Lord of all lords Shri Ram resides in divine city of koulshalpur where infinite incarnations like krishna, balram and others continuously salute him

सभी प्रभुओं के प्रभु श्री राम दिव्य नगरी कौशलपुर में निवास करते हैं जहाँ कृष्ण, बलराम और अन्य अनंत अवतार निरंतर उन्हें नमस्कार करते हैं।

कृष्ण उवाच:-

अयोध्यां परितो देशे कोटिविष्णवादयो वयम्।

वसामः सततं वत्स रघुवराज्ञाप्रपालकः ।।

Aadi ramayan 1.6.37

Krishna says:- we and crores of vishnu and other devas resides near ayodhya and obey the commands of Shri Raghunath.

कृष्ण कहते हैं:- हम और करोड़ों विष्णु तथा अन्य देवता अयोध्या के निकट निवास करते हैं और श्री रघुनाथ की आज्ञा का पालन करते हैं।

मत्स्योऽस्य हृदयं विष्णुर्योगिरूपी जनार्दनः ।

कूर्मोऽस्य धारणाशक्तिर्वराहो भुजयोर्बलम् ॥७॥

नारसिंहो महान् रोषो वामनः कटिमेखला ।

भार्गवोऽस्य परो धर्मो बलरामश्च संमदः ॥६॥

बुद्धस्तु करुणा साक्षात् कल्की चैतस्य संस्मृतिः ।

कृष्णोऽशांशो ह एवास्य वृन्दावनविभूषणः ॥१७॥

एते चांशकलाश्चैव रामस्तु भगवान् स्वयम् ।

Aadi ramayan 1.9.15-17

Brahma ji says:- Matsya avatar appeared from his heart, Janardana Vishnu form his Yogic form, Kurma is his retention power, Varaha is his arm strength, Narasimha from his anger, Vamana represents Lord Rama's waistband, Parashurama embodies his supreme duty, Balarama symbolizes his abundant wealth, Buddha is the incarnation of his direct compassion and Kalki is from Lord Sri Rama's mere remembrance, Sri Krishna is the incarnation of portion of the portion of Lord Sri Ram, who embellishing the playful Leelas in vrindavan. All these incarnations have manifested from the Kala-Ansh of Lord Sri Ram himself, but Sri Ram Himself is the Supreme God.

ब्रह्मा जी कहते हैं :- मत्स्य अवतार उनके हृदय से प्रकट हुए, जनार्दन विष्णु उनके योग रूप से, कूर्म उनकी धारण शक्ति है, वराह उनकी भुजा शक्ति है, नरसिंह उनके क्रोध से, वामन भगवान राम के कमरबंद का प्रतिनिधित्व करते हैं, परशुराम उनके सर्वोच्च कर्तव्य का प्रतीक हैं, बलराम उनकी प्रचुर संपत्ति के प्रतीक हैं, बुद्ध उनकी प्रत्यक्ष करुणा के अवतार हैं और कल्कि भगवान श्री से हैं। ये सभी अवतार स्वयं भगवान श्री राम के कला-अंश से प्रकट हुए हैं, लेकिन श्री राम स्वयं सर्वोच्च भगवान हैं।

सनातन धर्मो राम एव स्वयं द्विज।
न रामात् परतस्तत्त्वं वेदैरपि निचीयते।।
वेदान्ता ब्रह्मसूत्राणि चत्वारो निगमास्तथा।
ऐतिहासानि सर्वाणि पुराणानि तथा द्विज।।
धर्मः सांख्य तथा योगः सर्वं रामस्य सूचकम्।

~ Aadi ramayan 1.9.19-21a

Brahma ji says:-Shri Ramchandra is himself sanatan dharma. Even vedas say that Shri Ram is alone highest tattva. Four vedas, vedanta, brahmasutra, itihās, all puranas, sankhya darshan, dharma and yoga darshan all indicates Shri Ram

ब्रह्मा जी कहते हैं- श्री रामचन्द्र स्वयं सनातन धर्म हैं। वेद भी कहते हैं कि श्री राम ही एकमात्र परमतत्त्व हैं। चारों वेद, वेदांत, ब्रह्मसूत्र, इतिहास, सभी पुराण, सांख्य दर्शन, धर्म और योग दर्शन सभी श्री राम की ओर संकेत करते हैं।

यद् अक्षरं ब्रह्म सनातनं स्वराट् सहस्रनेत्राननपादबाहुकम्।
निरंजनं निष्प्रतिमं निरीहं श्रीराम तत्त्वत् चरणं वदन्ति।।

~ Aadi ramayan 1.10.19

That imperishable Brahman, eternal, self-sufficient, with thousands of eyes, face, feet and arms, devoid of colour, incomparable, selfless is called as the feet of Shri Ram.

श्री राम के चरण को अविनाशी ब्रह्म, शाश्वत, स्वयंभू, हजारों नेत्रों, मुखों, पैरों और भुजाओं वाला, रंग से रहित, अतुलनीय, निष्काम को कहते हैं।

यावन्ति सन्ति रूपाणि विष्णोरमिततेजसः ।

तावन्ति तव पुत्रस्य परंब्रह्मस्वरूपिणः । ।

~aadi ramayan 1.13.19

Whatever form does vishnu have, all of these forms are forms of parabrahman Shri Ramchandra

जितने भी रूप अत्यन्त तेजस्वी भगवान विष्णु के हैं, वे सब रूप आपके परब्रह्म श्रीराम का हश्रीराम उवाच:-

कोटिब्रह्माण्डविधयः कोटिब्रह्माण्डशङ्कराः ।

कुर्वन्ति रक्षणं चास्य कोटिब्रह्माण्डविष्णवः ॥

यत्राहं क्रीडनं कुर्वे साकेतपरितो वने ।

तस्यैव रक्षकाः सर्वे त्रिदशाः सेवका मम ॥

इत्युक्त्वा स्वस्य लोकस्य महिमानं रघूत्तमः ।

विसृज्य वेधसं सायं स्वमृहान् समुपाययौ ॥

~श्रीभुशुण्डि_रामायण १.२१.६१- ६३

Sri Ram says:- Brahma of millions of universes, Shankara of millions of universes, and Vishnu of millions of universes who are working to protect Saket (Ayodhya) where I (Rama) play. These infinite

number of three gods(trimurti), the protectors of Saketpuri, are my servants. Explaining such glory of his world, Raghuvar Sri Rama went to his house in the evening

श्रीराम कहते हैं:- करोड़ों ब्रह्मांडों के ब्रह्मा, शंकर, और विष्णु जो साकेत (अयोध्या) के चारों ओर रक्षा करने के लिए कार्यरत हैं जहाँ मैं (राम) खेलता हूँ ये साकेतपुरी के रक्षक समस्त त्रिदेव मेरे सेवक हैं। अपने लोक की ऐसी महिमा बताते हुए रघुवर श्रीराम संध्या होते ही अपने गृह को चले गये।

श्रीरामो भगवान् पुर्णः कलाभिः पुरुषोत्तमः ।

कोटिलक्ष्मीसहस्राणाम अंशिनी जनकात्मजा ।

एतयारेव दिव्यांशो राधाकृष्णत्मकौ ब्रजे । ।

रामांशो भगवान् कृष्णः सीतांशो राधिकेधरी ।

अन्याश्च सकला गोप्यस्तदंशांशाः उदीरिताः । ।

अन्याश्च सकला गोप्यस्तदंशांशाः उदीरिताः ।

द्वारिकायां रुक्मिणीयं महालक्ष्मी महेश्वरी । ।

अन्याश्च सत्यभामाद्यास्तदंशा सहजात्मिकाः ।

~ Aadi ramayan 1.25.30b-33a

Shri ram is ishwar of all kalas. Thousands of crores of shri Laxmi emnate from maa Janki. From divine portion of Sita Ram, Radha Krishna does raas lila in Vrindavan. All gopis, mahalaxmi maheshwari Rukmini and incarnation goddess Earth satyabhama are all parts of Maa Sita.

श्रीराम सभी कलाओं के ईश्वर हैं। माँ जानकी से हजारों करोड़ों श्री लक्ष्मी निकलती हैं। सीता राम के दिव्य अंश से राधा कृष्ण वृन्दावन में रास लीला करते हैं। सभी गोपियाँ, महालक्ष्मी माहेश्वरी रुक्मिणी और अवतार देवी पृथ्वी सत्यभामा सभी माँ सीता के अंश हैं।

यः कृष्णैकान्ततरो भक्तो रामभक्ति विवर्जितः ।

तस्मै न कथयेदेतां लीला विश्वस्य पावनीम् । ।

~ Aadi ramayan 1.25.47

If he is a solitary devotee of Lord Krishna but he does not have devotion to Lord Sri Rama, then he too should not recite Sri Ramleela because Sri Ramleela is very holy and purifies the world.

यदि भगवान् कृष्ण के एकांतिक भक्त हैं पर उनमें भगवान् श्रीराम के प्रति भक्ति नहीं है, तो उसे भी श्रीरामलीला का कथन नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रीरामलीला अत्यंत पवित्र और विश्व को पवित्र करने वाली है।

एवं सर्ववितारेषु कलास्वशेषु चाग्रणीः ।

उत्पत्तिविलयश्चैव रामो साकेतनायकः । ।

श्रीमदादि रामायण 1.89.15

Thus saketlokadhi pati Shri Ramchandra is the foremost among all ansha , kala incarnations and is the origin and dissolution of all incarnations.

इस प्रकार साकेतलोकधिपति श्री रामचन्द्र समस्त अंश, कला आदि अन्यो अवतारों में श्रेष्ठ हैं तथा समस्त अवतारों के मूल और प्रलय हैं।

यस्यांशा एव सर्वे वयमिह भुवने ब्रह्माविष्णु ईश मुख्याः ।

सृष्टि स्थिति अन्त लीला विचरण चतुरा वर्तयन्तीह चक्रम ।।

Aadi Ramayan 1.91.1b

Adi Narayana says, "O Rama! From a portion of yours, I Incarnate myself as Brahmā, Viṣṇu and śankara in different universes and Perform the process of Creation, Maintainance and Destruction and reside there.

आदि नारायण कहते हैं, "हे राम← मैं आपके अंश से अनंत ब्रह्माण्डों में ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के रूप में अवतार लेकर सृजन, पालन और संहार की प्रक्रिया करता हूँ तथा वहाँ निवास करता हूँ।

अनंतकोटिब्रह्माण्डं विभ्रद्रोमविलः परः ।

पुरुषः सोऽपि यस्यांशः कस्तस्मात् पर ईश्वरः ।।

~Aadi Ramayan 1.92.23

From whom infinite crores of universes appear from pores, that purusha or Mahavishnu is also an ansh of Shri Ram. Hence nobody is greater than Raghunath

जिसके अंश वो पुरुष या महाविष्णु है जिसके रोम रोम से अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं, उन भगवान श्रीराम से परे कोई ईश्वर नहीं है।

युगे युगेऽवतरतो गीयते वेदवित्तमै ।
अन्यानि चापि रूपाणि युगरूपानि विभ्रति । ।
गुणावतार रूपाणि तथैव अन्यानि भुरिशः ।
धैतरक्तपीतकृष्ण नाना वर्णानि वै खम । ।
तथैव अन्यानि रूपाणि कलाश्चांशा सनातनः ।
तथैव आवेशरूपाणि पृथुराज मुखानि च । ।
रामस्य एव अखिलारम्भा दृष्टाधैव श्रुता अपि ।
स्मृताः पुनन्ति भुवनं कस्तस्मात् पर ईश्वरः । ।

~ Aadi Ramayan 1.92.61-64

It is sung by the learned in the Vedas as it descends from age to age. He also assumes other forms of the age. There are many other forms of incarnations of virtues (brahma, Vishnu and rudra) as well. O bird! Avtaras are of various colors like white, red, yellow and black. Similarly, other forms and parts of the arts are eternal. Among all main passionate avtar is Raja prithu. We have seen, heard and remembered the entire avtaras of Shri Ram who purify the world. Who is a greater God than He?

वेदों के विद्वान् इसे युग-युग में गाते हैं। गुणों के अवतारों (ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र) के और भी अनेक रूप हैं। हे पक्षी— अवतार धैत, लाल, पीत और श्याम आदि अनेक रंगों के होते हैं। इसी प्रकार कलाओं के अन्य रूप और अंग भी सनातन हैं। समस्त भावावेशों में राजा पृथु प्रमुख हैं। हमने जगत को पवित्र करने वाले श्री राम के सम्पूर्ण अवतारों को देखा, सुना और स्मरण किया है। उनसे बड़ा ईश्वर कौन है?

सहस्रशीर्षनयनः पुरुषोऽस्यांश उच्यते।
तस्माद् रामचन्द्रो देवः सर्वकारणकारणम्।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सृष्टिस्थित्यंतकर्मणि।
गुणावताराः तस्यैव पुराविद्भिरुदाहृताः।।
तथान्ये मत्स्यकुर्मद्या अवताराः समीक्षितुः।
स एव भगवान् साक्षाद् भूद् दशरथे गृहे।।

~Aadi ramayan 1.110.358-360

The purusha who is praised with the mantra of thousands head, eyes, foot, hands is said to be a part of Ram. Therefore God Ramachandra is the cause of all causes. Brahma, Vishnu and Rudra in the action of creation, existence and destruction. The incarnations of the virtues of the same have been described by the ancient scholars. And other incarnations, such as the mataya , Kurma etc were present. That same Supreme Personality of Godhead appeared in the house of Dasaratha

सहस्रों सिरों, नेत्रों, चरणों और भुजाओं के मंत्रों से जिस पुरुष की स्तुति की जाती है, वह राम का अंश कहा गया है। अतः भगवान् रामचन्द्र समस्त कारणों के कारण हैं। सृष्टि, स्थिति और संहार की क्रिया में ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र भी विद्यमान हैं। उन्हीं के गुणों के अवतारों का वर्णन प्राचीन विद्वानों ने किया है। तथा मत्स्य, कूर्म आदि अन्य अवतार भी विद्यमान थे। वही भगवान् दशरथ के घर प्रकट हुए।

यत् पादाम्बुज विस्फुरन् नखमणि ज्योत्स्ना प्रकाशोद्यमम्।

साक्षाद् ब्रह्म परं यदन्तिमगिरा नेतीति वेदाः जगुः ।।

Adi ramayan 1.141.84

Vedas call parabrahman is light coming from nails of feet of bhagwan Shri Ramchandra as neti neti (not that, not that).

वेद कहते हैं कि श्रीराम के चरणकमल से निकलने वाले रोशनी अर्थात् परंब्रह्म को नेति नेति बुलाता है।

श्रीराम पादुका रुपं सच्चिदानन्दम् अव्ययम्।

यतोऽवताराः सर्वेऽपि स्रोतांसि जलधेर्यथा ।।

गुणावताराः सृष्ट्यर्थं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।

विभूतयाः कलाश्चांशाः सर्वे ज्ञानक्रियात्मकाः ।।

~Adi ramayan 2.57.11-12

Sri Rama's sandal form is the true bliss, the inexhaustible. From him all incarnations gets absorbed, just like like streams flows to the ocean. Brahma, Vishnu and Mahasvara are the incarnations of the modes for the purpose of creation, sustainance and destruction. His arts and parts and the powers incarnations are all composed of knowledge and action.

श्री रामचन्द्र जी का पादुका सच्चिदानन्द तथा अव्यय स्वरूप है। उनके चरणरेज से ही सारे अवतार उत्पन्न तथा विलीन हो जाते हैं जैसे नदियों का पानी समुद्र से उत्पन्न हो कर विलीन हो जाता है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी

श्री रामचन्द्र के अवतार हैं जो जगत की सृजन, पालन और संहार के लिए हुआ है। श्री राम के सारे अवतार ज्ञान और क्रियात्मक है।

कपिलो देवलो व्यास वसिष्ठः पुलह क्रतुः ।।

अत्रिश्चांगिरसः कण्वश्चयवनो नारदो भृगुः ।

अष्टावक्रः पुलस्त्यश्च कुम्भजः शंकरो रविः ।।

स्वयंभुर्वे तथा ब्रह्मा तथैवान्ये प्रजेश्वराः ।

पृथक् पृथक् संहिताभिः एकम् रामं अधीयते ।।

आदि रामायण ३.९.६-८

Kapila, Devala, Vyasa, Vasishta, Pulaha, Kratu, Atri, Angirasa, Kanva, Chayavana, Narada, Bhrigu, Ashtavakra, Pulastya, Kumbhajna, Shiva, Ravi, Svayambhuva Brahma and other lords of the creatures. All of them have written down their own different samhitas where one and only Shri Ram is studied

कपिल, देवल, व्यास, वशिष्ठ, पुलह और क्रतु, अत्रि, अंगिरस, कण्व, च्यवन, नारद, भृगु, अष्टावक्र, पुलस्त्य, कुंभजना, शिव, रवि, स्वायंभुव ब्रह्मा और प्राणियों के अन्य स्वामी। इन सभी ने अपनी-अपनी अलग-अलग संहिताएँ लिखी हैं जिनमें केवल और केवल श्री राम का ही अध्ययन किया गया है

रामो हि परम ब्रह्म कालमायाक्षरातिगम्।

संपूर्णमाक्षरातीतं पुरुषोत्तमशब्दितम् ।

~ Aadi Ramayan

Shri Ramchandra is alone Supreme brahman who is beyond kaal, maya and akshar brahman. He is aksharatita brahman and called by purushottam.

श्री रामचन्द्र ही एकमात्र परम ब्रह्म हैं जो काल, माया तथा अक्षर ब्रह्म से परे हैं। वे अक्षरातीत ब्रह्म हैं और पुरुषोत्तम शब्द से संबोधित किया जाता है।

स भूमापुरुषोऽस्यांश किमुतान्ये सुरादयः ।

सर्ववितारमुलम् तदकालमायागुणातिगम् ।

~ Aadi Ramayan 3.29.24

Shukadev says:- the bhuma purusha (eight handed vishnu) is also ansh of Shri Ram, what to talk about other gods. Raghunath is root of all incarnations and is beyond kaal, maya and attributes

शुकदेव कहते हैं:- भूमा पुरुष (आठ भुजाओं वाले विष्णु) भी श्रीराम के अंश हैं, अन्य देवताओं की तो बात ही क्या है। रघुनाथ सभी अवतारों के मूल हैं और काल, माया और गुणों से परे हैं।

लक्ष्मीरस्याः प्रभुतांऽशो वैकुण्ठे विराजते ।

श्रीमन्नारायणयुताः सर्वभक्तेष्टदायिनी ।

नारायणोऽपि रामांश शंखचक्रगदाभृत् ।

चतुर्भुजस्वरूपेन वैकुण्ठे च प्रकाशते ।

~ Aadi ramayan 3.29.29b-31a

Laxmi who accompanies shriman narayana in vaikunth and who gives devotees all wishes is ansh of Bhagwati Sita. Four handed Narayana who welds conch, discus and mace who resides in vaikunth is also an ansh of Shri Ramchandra.

लक्ष्मी जो वैकुंठ में श्रीमन् नारायण के साथ रहती हैं और भक्तों को सभी कामनाएँ प्रदान करती हैं, वे भगवती सीता का अंश हैं। शंख, चक्र और गदा धारण करने वाले चतुर्भुज नारायण, जो वैकुंठ में निवास करते हैं, वे भी श्री रामचंद्र के अंश हैं।

यस्य अंश मात्र विभवः श्रीमन् नारायण स्वयम्।

यस्य अंशांशाः प्रजायन्ते अवतारा ह्यनेकधा ।।

भुमा अपि पुरुषो यस्य सहस्र वदनः स्वराट्।

अंश एव प्रकथितो विष्णु ब्रह्माण्ड विग्रहः ।

उत्पद्यन्ते विलीयन्ते ब्रह्मणां कोटयः किल ।।

इदम् श्रीरामवैकुण्ठम् नित्यं धाम प्रकीर्तितम्।

सहजानन्दिनीलोको व्यापकश्चित् सुखाकृतिः ।।

रक्षकाः परितस्तस्य कोटयश्चक्रधारिणः ।

चतुर्मुखाः कोटयश्च कोटयश्चैव शंकराः ।।

~ Aadi Ramayan 3.33.21-25

Shri Ram whose only fraction of power is Sri Narayana (vaikunth nivashi vishnu) Himself. Parts of parts of Him are born into crores of

incarnations in many ways. Bhuma purush who has a thousand faces is also an ansh. Crores of Vishnu who lives in universe (garbhodaksayi vishnu) and Crores of Brahma, crores of rudra are indeed arising and dissolving in him. This is declared to be the eternal abode of Sri Ram Vaikuntha aka Saket dham. The world is permanent joyful, omnipresent and pleasant in appearance. This dham is surrounded with crores of Vishnu, four-faced brahma and Lord Shiva.

श्री राम जिनकी शक्ति का एकमात्र अंश श्री नारायण (वैकुंठ निवासी विष्णु) स्वयं हैं। उनके अंशों के अंश कई प्रकार से करोड़ों अवतारों में जन्म लेते हैं। भूमापुरुष जिसके एक हजार चेहरे हैं, वह भी एक अंश है। ब्रह्मांड में रहने वाले करोड़ों विष्णु (गर्भोदक्षयी विष्णु) और करोड़ों ब्रह्मा, करोड़ों रुद्र वास्तव में उनमें उत्पन्न और विलीन हो रहे हैं। यह श्री राम वैकुंठ उर्फ साकेत धाम का शाश्वत निवास घोषित किया गया है। जगत् नित्य आनन्दमय, सर्वव्यापी और दिखने में सुखदायी है। यह धाम करोड़ों विष्णु, चार मुख वाले ब्रह्मा और भगवान शिव से घिरा हुआ है।

